

**श्री हनुमान साठिका PDF**  
**॥ चौपाइयां ॥**

जय जय जय हनुमान अडंगी ।  
महावीर विक्रम बजरंगी ॥  
जय कपीश जय पवन कुमारा ।  
जय जगबन्दन सील अगारा ॥

जय आदित्य अमर अबिकारी ।  
अरि मरदन जय-जय गिरधारी ॥  
अंजनि उदर जन्म तुम लीन्हा ।  
जय-जयकार देवतन कीन्हा ॥

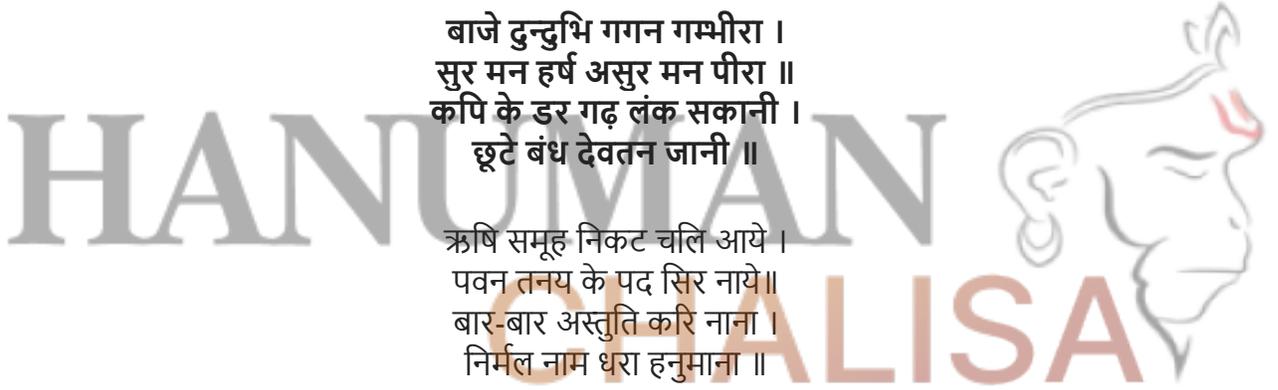
बाजे दुन्दुभि गगन गम्भीरा ।  
सुर मन हर्ष असुर मन पीरा ॥  
कपि के डर गढ़ लंक सकानी ।  
छूटे बंध देवतन जानी ॥

ऋषि समूह निकट चलि आये ।  
पवन तनय के पद सिर नाये ॥  
बार-बार अस्तुति करि नाना ।  
निर्मल नाम धरा हनुमाना ॥

सकल ऋषिन मिलि अस मत ठाना ।  
दीन्ह बताय लाल फल खाना ॥  
सुनत बचन कपि मन हर्षाना ।  
रवि रथ उदय लाल फल जाना ॥

रथ समेत कपि कीन्ह अहारा ।  
सूर्य बिना भए अति अंधियारा ॥  
विनय तुम्हार करै अकुलाना ।  
तब कपीस की अस्तुति ठाना ॥

सकल लोक वृत्तान्त सुनावा ।  
चतुरानन तब रवि उगिलावा ॥  
कहा बहोरि सुनहु बलसीला ।  
रामचन्द्र करिहैं बहु लीला ॥



तब तुम उन्हकर करेहू सहाई ।  
अबहिं बसहु कानन में जाई ॥  
असकहि विधि निजलोक सिधारा ।  
मिले सखा संग पवन कुमारा ॥

खेलैं खेल महा तरु तोरैं ।  
ढेर करैं बहु पर्वत फोरैं ॥  
जेहि गिरि चरण देहि कपि धाई ।  
गिरि समेत पातालहिं जाई ॥

कपि सुग्रीव बालि की त्रासा ।  
निरखति रहे राम मगु आसा ॥  
मिले राम तहं पवन कुमारा ।  
अति आनन्द सप्रेम दुलारा ॥

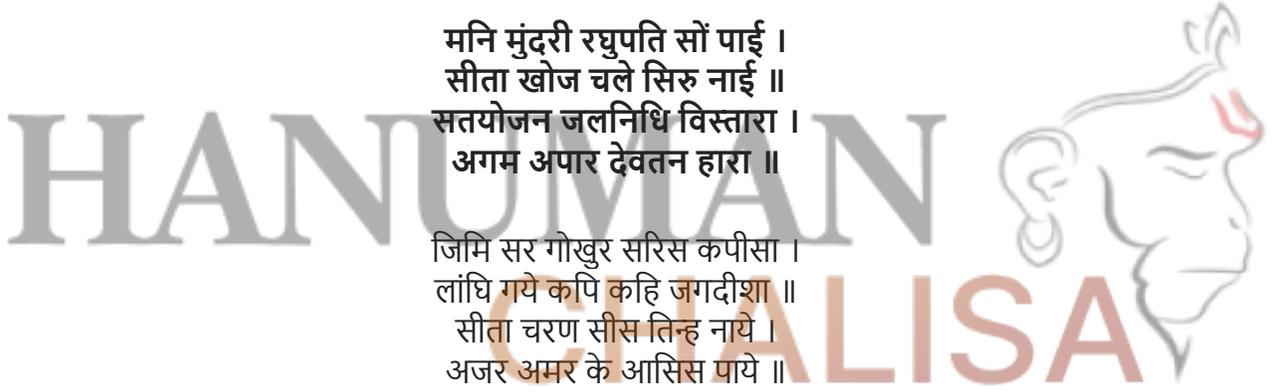
मनि मुंदरी रघुपति सों पाई ।  
सीता खोज चले सिरु नाई ॥  
सतयोजन जलनिधि विस्तारा ।  
अगम अपार देवतन हारा ॥

जिमि सर गोखुर सरिस कपीसा ।  
लांघि गये कपि कहि जगदीशा ॥  
सीता चरण सीस तिन्ह नाये ।  
अजर अमर के आसिस पाये ॥

रहे दनुज उपवन रखवारी ।  
एक से एक महाभट भारी ॥  
तिन्हें मारि पुनि कहेउ कपीसा ।  
दहेउ लंक कोप्यो भुज बीसा ॥

सिया बोध दै पुनि फिर आये ।  
रामचन्द्र के पद सिर नाये ॥  
मेरु उपारि आप छिन माहीं ।  
बांधे सेतु निमिष इक माहीं ॥

लछमन शक्ति लागी उर जबहीं ।  
राम बुलाय कहा पुनि तबहीं ॥  
भवन समेत सुषेन लै आये ।  
तुरत सजीवन को पुनि धाये ॥



मग महं कालनेमि कहं मारा ।  
अमित सुभट निसिचर संहारा ॥  
आनि संजीवन गिरि समेता ।  
धरि दीन्हों जहं कृपा निकेता ॥

फनपति केर सोक हरि लीन्हा ।  
वर्षि सुमन सुर जय जय कीन्हा ॥  
अहिरावण हरि अनुज समेता ।  
लै गयो तहां पाताल निकेता ॥

जहां रहे देवि अस्थाना ।  
दीन चहै बलि काढ़ि कृपाना ॥  
पवनतनय प्रभु कीन गुहारी ।  
कटक समेत निसाचर मारी ॥

रीछ कीसपति सबै बहोरी ।  
राम लषन कीने यक ठोरी ॥  
सब देवतन की बन्दि छुड़ाये ।  
सो कीरति मुनि नारद गाये ॥

अछयकुमार दनुज बलवाना ।  
कालकेतु कहं सब जग जाना ॥  
कुम्भकरण रावण का भाई ।  
ताहि निपात कीन्ह कपिराई ॥

मेघनाद पर शक्ति मारा ।  
पवन तनय तब सो बरियारा ॥  
रहा तनय नारान्तक जाना ।  
पल में हते ताहि हनुमाना ॥

जहं लागि भान दनुज कर पावा ।  
पवन तनय सब मारि नसावा ॥  
जय मारुत सुत जय अनुकूला ।  
नाम कृसानु सोक सम तूला ॥

जहं जीवन के संकट होई ।  
रवि तम सम सो संकट खोई ॥  
बन्दि परै सुमिरै हनुमाना ।  
संकट कटै धरै जो ध्याना ॥

HANUMAN



ALISA

जाको बांध बामपद दीन्हा ।  
मारुत सुत व्याकुल बहु कीन्हा ॥  
सो भुजबल का कीन कृपाला ।  
अच्छत तुम्हें मोर यह हाला ॥

आरत हरन नाम हनुमाना ।  
सादर सुरपति कीन बखाना ॥  
संकट रहै न एक रती को ।  
ध्यान धरै हनुमान जती को ॥

धावहु देखि दीनता मोरी ।  
कहाँ पवनसुत जुगकर जोरी ॥  
कपिपति बेगि अनुग्रह करहु ।  
आतुर आइ दुसइ दुख हरहु ॥

राम सपथ मैं तुमहिं सुनाया ।  
जवन गुहार लाग सिय जाया ॥  
यश तुम्हार सकल जग जाना ।  
भव बन्धन भंजन हनुमाना ॥

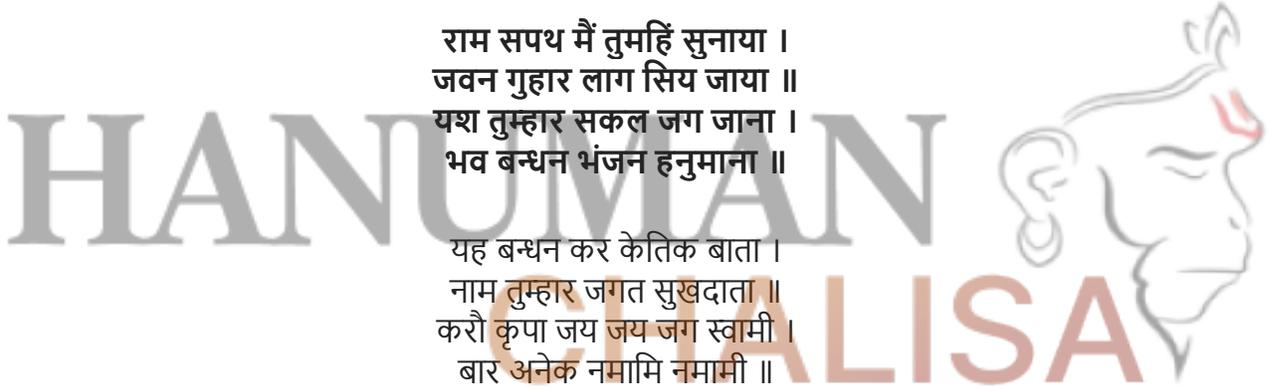
यह बन्धन कर केतिक बाता ।  
नाम तुम्हार जगत सुखदाता ॥  
करौ कृपा जय जय जग स्वामी ।  
बार अनेक नमामि नमामी ॥

भौमवार कर होम विधाना ।  
धूप दीप नैवेद्य सुजाना ॥  
मंगल दायक को लौ लावे ।  
सुन नर मुनि वांछित फल पावे ॥

जयति जयति जय जय जग स्वामी ।  
समरथ पुरुष सुअन्तरजामी ॥  
अंजनि तनय नाम हनुमाना ।  
सो तुलसी के प्राण समाना ॥

॥ दोहा ॥

जय कपीस सुग्रीव तुम, जय अंगद हनुमान ॥  
राम लषन सीता सहित, सदा करो कल्याण ॥  
बन्दौ हनुमत नाम यह, भौमवार परमान ॥



ध्यान धरै नर निश्चय, पावै पद कल्याण ॥  
जो नित पढ़ै यह साठिका, तुलसी कहैं बिचारि ।  
रहै न संकट ताहि को, साक्षी हैं त्रिपुरारि ॥

॥ सवैया ॥

आरत बन पुकारत हौं कपिनाथ सुनो विनती मम भारी ।  
अंगद औ नल-नील महाबलि देव सदा बल की बलिहारी ॥  
जाम्बवन्त सुग्रीव पवन-सुत दिबिद मयंद महा भटभारी ।  
दुःख दोष हरो तुलसी जन-को श्री द्वादश बीरन की बलिहारी ॥

HANUMAN   
CHALISA